Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 1; 2025; Page No. 142-146

Received: 04-10-2024
Accepted: 13-12-2024

मध्य प्रदेश की रॉक कला का अन्वेषण और महत्व

[1]प्राजक्ता उदय जोशी, [2]डॉ. प्रतिभा तिवारी, [3]डॉ. अंजली पाण्डेय, [4]प्रो. आर. सी. मिश्रा

[1]शोधार्थी, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[2]विजिटिंग प्रोफेसर, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[3]पत्राचार लेखक, एसोसिएट प्रोफेसर, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[4]कुलपति, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15806180

Corresponding Author: प्राजक्ता उदय जोशी

सारांश

अध्ययन में सांस्कृतिक मान्यताओं के साथ-साथ उस समय की आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों के प्रतिबिंब के रूप में रॉक आर्ट के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है। पुरातत्व और भूगोल को शामिल करते हुए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से अध्ययन से पता चलता है कि रॉक आर्ट हमारे अध्ययन क्षेत्र के व्यापक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिदृश्य की हमारी समझ में कैसे योगदान देता है, इन क्षेत्रों में प्रारंभिक मानव अनुभव के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। यह ऐतिहासिक विश्लेषण पिथोरा चित्रकला की आकर्षक कहानी के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करेगा, इसकी उत्पत्ति, विकास और सांस्कृतिक महत्व की खोज करेगा।

मूलशब्द: कला, पौराणिक कथाएँ, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, संरक्षण।

प्रस्तावना

रॉक आर्ट प्रागैतिहासिक से आधुनिक युग तक मानव संस्कृति के प्रतीकात्मक, कलात्मक, जादुई-धार्मिक और सामाजिक-आर्थिक घटकों को कवर करने वाले प्रतिनिधित्वों की विविध श्रेणियों का एक संग्रह है। रॉक आर्ट ऐतिहासिक अभिलेख का एक रूप है जो हमें विभिन्न कालानुक्रमिक संदर्भों में विभिन्न पारिस्थितिक क्षेत्रों में कलात्मक और सांस्कृतिक परंपराओं और विश्वास प्रणालियों के विकास को समझने में मदद करता है। इसका अलगाव में अध्ययन नहीं किया जा सकता है; इसका अर्थ और महत्व समझने के लिए इसे इसके सांस्कृतिक, पारिस्थितिक और कालानुक्रमिक संदर्भों से जोड़ा गया है। सैद्धांतिक दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करने वाले अध्ययनों के माध्यम से भारत की रॉक आर्ट को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।

यह अनुभूति के विकास का प्रतिनिधित्व करता है और विभिन्न घटनाओं की अनुभूति में भिन्नता को भी दर्शाता है। रॉक आर्ट की व्याख्या के लिए कोई सार्वभौमिक तरीका नहीं है। रॉक आर्ट अध्ययनों में व्यक्तिपरकता हमेशा मौजूद रहती है, जिससे अटकलें लगाने वाली पहचान और व्याख्याएँ होती हैं। रॉक आर्ट के लेखकों द्वारा व्यक्त किए जाने वाले संदेश की तार्किक व्याख्या बिना किसी पूर्वकल्पित विचारों या पूर्वाग्रह के बिल्कुल सटीक तरीके से की जानी चाहिए। रॉक आर्ट, एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत और सार्वभौमिक घटना है, जो मानव इतिहास की लंबी अवधि तक जीवित रही है और समय के साथ मानव मन और उसके विकास को समझने के लिए एक अमूल्य स्रोत है। रॉक आर्ट को समझने के लिए वैज्ञानिक और व्यवस्थित दस्तावेज़ीकरण, विवरण के साथ-साथ सैद्धांतिक और संज्ञानात्मक दृष्टिकोण आवश्यक हैं।

भारत के विभिन्न भूभौतिकीय क्षेत्रों से शैल कला स्थलों की रिपोर्ट की गई है और मध्य भारत में सबसे अधिक सांद्रता विशेष रूप से मध्य प्रदेश राज्य में दर्ज की गई है। इस क्षेत्र में शैल कला में प्राकृतिक और अमूर्त दोनों रूपांकनों को शामिल किया गया है, जो चित्रलेखों या पेट्रोग्लिफ़ के रूप में शैल आश्रयों की छत, दीवारों और फर्श पर निष्पादित किए गए हैं। उत्कीर्णन, चोंच मारने या चोट पहुँचाने से निष्पादित विभिन्न प्रकार के पेट्रोग्लिफ़ उन आश्रयों को सुशोभित करते हैं। कप्यूल्स जिन्हें शैल कला का सबसे

प्रारंभिक रूप माना जाता है, भीमबेटका, दारकी-चट्टान और इंद्रगढ़ जैसे स्थलों से दर्ज किए गए हैं। पेट्रोग्लिफ़ के रूप लगभग अनुपस्थित हैं, सिवाय भीमबेटका से कुछ चोटों के।

मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के अटनेर और मुलताई तहसीलों के राजस्व क्षेत्राधिकार में आने वाली गाविलगढ़ पहाड़ियों में 247 सुसज्जित शैल आश्रयों की खोज के साथ पूरा परिदृश्य बदल गया। इक्कीस समूहों में विभाजित इन आश्रयों को पेट्रोग्लिफ़ और चित्रलेखों से सजाया गया है। कुछ आश्रयों में उत्कीर्णन, चोंच मारने और चोट लगने सहित पेट्रोग्लिफ़ देखे गए हैं। पेट्रोग्लिफ़ में कप्यूल शामिल हैं - गहरे और उथले, चोंच मारने, उत्कीर्णन, चट्टान की सतह पर गहराई से उकेरे गए, जिनमें सबसे आम तौर पर गौर (बोसवेलगेवसगौरस) के समूहों को दर्शाया गया है, जो विभिन्न मनोदशाओं और गतिविधियों में हैं, जैसे चरना, दौड़ना, ढलान पर चढ़ना और चंचल शरारतें करना; अन्य शाकाहारी जानवर जैसे बैल, चौसिंघा और हिरण, योनी, जंगल के दृश्य भी विषय प्रदर्शनों की सूची में प्रमुख स्थान पाते हैं। वर्तमान पत्र इन शैल कला के रूपों को कालानुक्रमिक-सांस्कृतिक संदर्भों की ज्ञात सीमाओं के भीतर समग्र रूप से उजागर करने का इरादा रखता है।

साहित्य की समीक्षा

श्री एम. वाल्या (2022) भारत में अफ्रीकी महाद्वीप के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी जनजातीय आबादी है। समाज में रहने वाले कमज़ोर वर्ग के लोगों को न्याय दिलाने के लिए न्यायसंगत नीति का निर्माण और उसका कार्यान्वयन राज्य की प्राथमिक ज़िम्मेदारी है। भारत में जनजातीय समुदाय अपने दैनिक जीवन में कई मुद्दों से जूझ रहा है और रोज़मर्रा की ज़िंदगी की बुनियादी ज़रूरतों के लिए संघर्ष कर रहा है, जो दूसरों को आसानी से मिल जाती हैं। जनजातीय विकास हमेशा से ही केंद्र और राज्य दोनों सरकारों के लिए बड़ी चिंता का विषय रहा है।

रस्तोगी, ट्विंकल (2024) यह पुस्तक भारत के हृदय में स्थित मध्य प्रदेश राज्य की समृद्ध और विविध कलात्मक विरासत का व्यापक अन्वेषण प्रदान करती है। यह इस विरासत के दो अलग-अलग लेकिन परस्पर जुड़े पहलुओं - पारंपरिक शिल्प और आदिवासी कला रूपों पर प्रकाश डालती है। पुस्तक का पहला भाग मध्य प्रदेश के पारंपरिक शिल्पों पर केंद्रित है, जिसमें बांस शिल्प, कपड़ा बुनाई, बाघ प्रिंट, ज़री ज़रदोज़ी, बट्टो बाई गुड़िया और अन्य शिल्प जैसे पेपर माचे कला, पत्थर की नक्काशी, लकड़ी के शिल्प और जूट के काम शामिल हैं। प्रत्येक शिल्प का विस्तार से अन्वेषण किया गया है, इसके ऐतिहासिक महत्व, कारीगरों द्वारा नियोजित तकनीकों और इसकी समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया है।

चिकित्सा समूह के सर सीताराम और लेडी शांताबा (2023) इस अध्ययन का उद्देश्य मूल जनजाति के जीवन को समझना है। आदिम जनजातियाँ मूल निवासी लोग हैं जो किसी विशेष भूमि या निश्चित क्षेत्र से संबंध रखते हैं, यह आवश्यक नहीं है कि वे अपना पूरा जीवन उसी क्षेत्र में बिताएँ, अधिकांश समय वे जीवन यापन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते रहते हैं। वे प्रकृति से जुड़कर अपना जीवन यापन करते हैं और मौसमी उत्सवों और कला और शिल्प जैसे अपने जीवन के तरीके के लिए वनस्पतियों और जीवों पर निर्भर रहते हैं। आज के आधुनिक समय में जरूरत है कि जनजातियाँ और शेष विश्व एक-दूसरे से जुड़ें, जनजातियाँ अपनी सुरक्षा और अस्तित्व के लिए और शहरवासी अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए अपनी जड़ों से जुड़ें।

चक्रवर्ती, कल्याण (2019) मध्य प्रदेश में रॉक कला, मुख्य रूप से चित्रात्मक, खुले रेत पत्थर के आश्रयों में, एक पेट्रोग्लिफ़िक, मुख्य रूप से कप मार्क परंपरा के साथ भी है। इसकी पहचान शिकार, संग्रहण और कृषि-पशुपालन संस्कृति का चित्रण है, जो आज भी पहाड़ी और जंगल में रहने वाले आदिवासी लोगों की कला और जीवन शैली में जारी है। रॉक आर्ट शैली प्रतीकात्मक और गैर-प्रतिष्ठित, गतिशील और स्थिर, आकृतिपूर्ण और ज्यामितीय, शारीरिक और गैर-शारीरिक, प्राकृतिक और अमूर्त के बीच झूलती रहती है, क्योंकि इसकी मध्य भारतीय स्थिति, जो आसपास के पारिस्थितिकी सांस्कृतिक क्षेत्रों की शैलीगत प्राथमिकताओं का हिस्सा है। यह संस्कृतियों के सह-अस्तित्व और ओवरलैप और विभिन्न कालानुक्रमिक क्षितिज से पुष्प, जीव और फसल संयोजनों की सह-घटना को भी दर्शाता है।

चक्रवर्ती, कल्याण। (2018) यह खंड एक सार्वभौमिक अस्तित्व के विचार और छवि की खोज के बारे में बात करता है जो सभी प्राणियों के लिए सब कुछ हो सकता है। यह पुस्तक एशिया और विश्व में, 1987 में भारत के छत्तीसगढ़ के ताला में पाई गई अद्वितीय, तीन अंगों वाली, विशाल 5वीं शताब्दी ईस्वी की रुद्र शिव प्रतिमा की समानताएं, मिसालें और संतानों की तलाश में दूर तक जाती है। यह इसकी उपस्थिति की असीम जीवंतता, समकालिकता, अस्पष्टता और इसके निरूपक और अर्थसूचक अर्थ की गहनता की खोज करती है। लेखक के नेतृत्व में उत्खनन, अन्वेषण, संरक्षण और जीर्णोद्धार के आधार पर यह पुस्तक एक गहन ऐतिहासिक जांच के द्वारा अनाज से भूसा अलग करती है; पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर खंडित स्मारकों और स्थलों का वैचारिक रूप से पुनर्निर्माण करती है; कला की बहुमुखी लिपि को पुनः प्राप्त करने के लिए पुरालेख संबंधी, दार्शनिक, धार्मिक, वनस्पति और कलात्मक ग्रंथों की गहरी खुदाई करती है; वास्तुकला और मूर्तिकला में समग्र शैलीगत आंदोलन का पुनर्निर्माण, एकता और विविधताओं के स्थानिक लौकिक संदर्भ के एक कठोर, तुलनात्मक विश्लेषण में; और, अंतर-अनुशासनात्मक तरीकों का उपयोग करके, और, भारतीय और पश्चिमी व्याख्यात्मक क्षितिज के एक बेहतरीन संलयन को प्रभावित करके, भारतीय कला इतिहास में नए दृष्टिकोण खोलता है।

लोक साहित्य और पौराणिक कथाओं का प्रभाव

पिथोरा चित्रकला पर लोक साहित्य और पौराणिक कथाओं का गहरा प्रभाव है, जिसमें पौराणिक विषय, लोककथाएँ और आदिवासी मान्यताएँ और प्रथाएँ सभी मिलकर इस अनूठी कला को आकार देते हैं। पिथोरा चित्रकला में अक्सर पौराणिक कहानियाँ और किंवदंतियाँ दर्शाई जाती हैं, जिनमें देवी-देवता, पैतृक नायक और अलौकिक प्राणी शामिल होते हैं। यह कला रूप प्रतीकात्मकता और प्रतीकात्मकता से परिपूर्ण है, जहाँ विशिष्ट प्रतीक और रूपांकनों का अर्थपूर्ण महत्व होता है। उदाहरण के लिए, सूर्य और चंद्रमा जीवन और मृत्यु के चक्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि जानवर विभिन्न गुणों और दोषों का प्रतीक हैं। पिथोरा चित्रकला के माध्यम से, कारीगर कहानियाँ सुनाते हैं और सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाते हैं, जिससे यह कला रूप आदिवासी लोककथाओं और पौराणिक कथाओं को संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण साधन बन जाता है। पिथोरा चित्रकला पर लोककथाओं और पौराणिक कथाओं के प्रभाव की खोज करके, हम कला रूप के पीछे सांस्कृतिक महत्व और अर्थ के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं, जो भारतीय सांस्कृतिक विविधता के इस अनूठे पहलू को संरक्षित करने के महत्व पर प्रकाश डालता है।

औपनिवेशिक और आधुनिक प्रभाव

उपनिवेशवाद और आधुनिकीकरण के आगमन ने पिथोरा चित्रकला पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला, जिससे इसके पारंपरिक रूप और उद्देश्य बदल गए। उपनिवेशवाद ने नई सामग्री, तकनीक और कलात्मक शैलियाँ पेश कीं, जैसे जल रंग और परिप्रेक्ष्य, जिन्हें पिथोरा कारीगरों ने अपने काम में शामिल किया।

ब्रिटिश औपनिवेशिक युग में पिथोरा कला के लिए एक नए बाजार का उदय भी हुआ, जिससे अधिक सजावटी और वाणिज्यिक टुकड़े बनने लगे। आधुनिक युग में, पिथोरा पेंटिंग का विकास जारी रहा है, जिसमें कलाकार नए विषयों, शैलियों और माध्यमों जैसे ऐक्रेलिक और कागज़ के साथ प्रयोग कर रहे हैं। शहरीकरण और प्रवासन ने पिथोरा को अन्य कला रूपों के साथ मिश्रित करने का भी नेतृत्व किया है, जिसके परिणामस्वरूप अभिनव संलयन शैलियाँ सामने आई हैं। इन परिवर्तनों के बावजूद, पिथोरा पेंटिंग अपनी आदिवासी विरासत में गहराई से निहित है, जिसमें कई कारीगर अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं से प्रेरणा लेना जारी रखते हैं। औपनिवेशिक और आधुनिक प्रभावों के प्रतिच्छेदन ने इस कला रूप को समृद्ध किया है, जिससे इसे तेजी से बदलती दुनिया में अनुकूलन और पनपने का मौका मिला है।

रॉक आर्ट का सांस्कृतिक महत्व

शिकार संस्कार रॉक आर्ट के पीछे के उद्देश्य की व्याख्या करने वाले सबसे शुरुआती सिद्धांतों में से एक 'शिकार जादू' था। वर्ष 1903 में सैल्मन रेइनाच ने पश्चिमी यूरोप में कला बनाने के उद्देश्य को समझने के लिए नृवंशविज्ञान अध्ययनों का उपयोग किया, लेकिन खुद को शिकारी और संग्रहकर्ता समाजों के अध्ययन तक सीमित रखा, जो उनके विचार में प्रागैतिहासिक लोगों के रहने के तरीके के सबसे करीब थे। रेइनाच का मानना था कि जादू धर्म का सबसे पुराना रूप था और इसलिए प्रागैतिहासिक रॉक आर्ट में जादुई अर्थ थे। उनके अनुसार, रॉक पेंटिंग बनाने के जादुई कार्य के तीन मुख्य उद्देश्य रहे होंगे, शिकार की सफलता में वृद्धि, मूल्यवान जानवरों की प्रजनन क्षमता में वृद्धि और खतरनाक जानवरों को नष्ट करना। उन्होंने रॉक आर्ट बनाने के पीछे के उद्देश्य को समझाने के लिए सहानुभूति जादू का सिद्धांत विकसित किया।

सहानुभूति जादू छवि और उसके द्वारा दर्शाए गए विषय के बीच एक सीधा संबंध दर्शाता है। माना जाता है कि छवि पर किए गए कार्य सीधे विषय को प्रभावित करते हैं, मानव और पशु दोनों। इस सिद्धांत को अब्बे हेनरी ब्रूइल और काउंट हेनरी बेगौएन ने 'शिकार जादू' के नाम से अपनाया, विस्तारित और प्रचारित किया। हेनरी ब्रूइल ने तर्क दिया कि चित्रों का उद्देश्य शिकारियों को अपने शिकार पर शक्ति प्रदान करना था। कई चित्रों में जानवरों को भालों और अन्य हथियारों से घायल दिखाया गया था, और उन्होंने तर्क दिया कि जानवर मंत्रमुग्ध थे और इसे दर्शाने का कार्य एक वास्तविक जानवर की मृत्यु को प्रभावित करेगा।

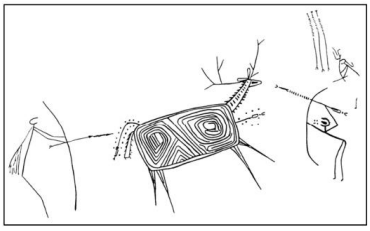

चित्र 1: न्यूमेयर 1993 के बाद

चित्र-1 रजत प्रताप, होशंगाबाद जिला पचमढ़ी के रजत पर्वत से एक मध्यपाषाण काल का शिकार दृश्य (चित्र-1) दो छड़ीनुमा शिकारियों को कांटेदार सूक्ष्मपाषाण बाणों से एक हिरण पर हमला करते हुए दिखाता है। एक तीर हिरण की छाती में और दूसरा उसकी पीठ में घुस जाता है। तीरों के चारों ओर दिखाए गए बिंदु खून को दर्शाते हैं।

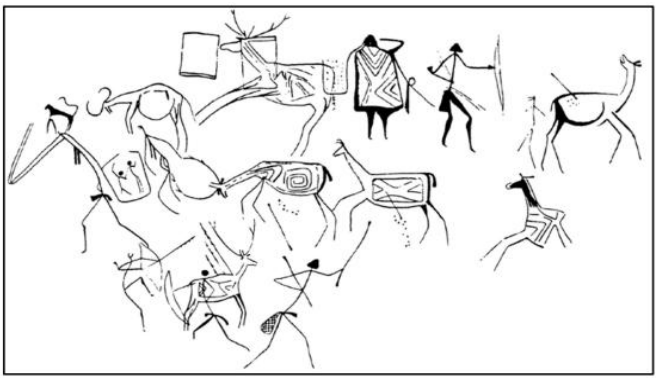

चित्र 2: न्यूमेयर 1993 के बाद

चित्र-2 लाखाजुआर, रासीसेन जिला लाखाजुआर में एक मध्यपाषाण काल का शिकार दृश्य है, जहाँ कई हिरणों का शिकार कई छड़ीनुमा शिकारी धनुष और तीर का उपयोग करके कर रहे हैं (चित्र-2) । ऊपर वाला हिरण एक फ्रेम जाल में फँसा हुआ है। अन्य हिरणों को घायल दिखाया गया है, उनके शरीर में तीर लगे हुए हैं और खून टपक रहा है। दाईं ओर का हिरण पीछे मुड़ता हुआ और दर्द से कराहता हुआ दिखाया गया है। उभरे हुए स्तनों वाली एक महिला एक घायल हिरण को उसके सींगों से घसीटती हुई दिखाई देती है।

रॉक आर्ट के सामाजिक-राजनीतिक पहलू

नृत्य दृश्य हमारे अध्ययन क्षेत्र के सभी छह जिलों में दर्शाए गए हैं और सभी समय अवधियों में दिखाई देते हैं। चित्रों में आम तौर पर सामुदायिक नृत्यों को दर्शाया गया है, जिसमें व्यक्तिगत नर्तकों की संख्या कम है। लयबद्ध, समन्वित आंदोलनों में लगे नर्तकों को दिखाया गया है, जो आमतौर पर पंक्तियों में और कभी-कभी गोलाकार संरचनाओं में व्यवस्थित होते हैं। ताम्रपाषाण काल से, हमें नृत्य रचनाओं के हिस्से के रूप में संगीत वाद्ययंत्रों के चित्रण मिलने लगते हैं। हालाँकि, ऐसे चित्रण काफी दुर्लभ हैं।

रहमान (1959: 733) ने मध्य भारतीय जनजातियों पर गहन अध्ययन किया और उस जानकारी के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि साइबेरियाई ओझाओं की तरह, जो ढोल का उपयोग करके समाधि में चले जाते थे, मध्य भारत के ओझाओं ने भी विनो का उपयोग करके ऐसा ही किया। उनका कहना है कि विनो पर चावल हिलाने से ओझा को समाधि में भेज दिया जाता था, जिससे यह एक दिव्य यंत्र बन जाता था। उन्होंने आगे कहा कि ढोल का उपयोग मुख्य रूप से नृत्य के साथ संगत के रूप में किया जाता था, लेकिन इसका उपयोग जादूगरों द्वारा नहीं किया जाता था। नृत्य दृश्यों का प्रतिनिधित्व इस बात का प्रमाण है कि आश्रय में रहने वालों के बीच कलात्मक चेतना विविध रूपों में प्रकट हुई थी। ऐसे दृश्यों की बार-बार उपस्थिति, विशेष रूप से मध्यपाषाण काल के दौरान, यह संकेत देती है कि नृत्य ने आश्रय में रहने वालों के सामुदायिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और यह खुशी और उत्सव की अभिव्यक्ति होने के साथ-साथ महत्वपूर्ण

सामाजिक और अनुष्ठानिक कार्य भी करता था। इन चित्रों के पीछे के सटीक अर्थ की व्याख्या करना मुश्किल है, लेकिन नृवंशविज्ञान संबंधी साक्ष्य इस पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं। विद्वानों ने उल्लेख किया है कि नृत्य दुनिया भर के शैमैनिक समाजों में एक अभिन्न भूमिका निभाता है।

लोमेल (1967) के अनुसार, शैमनीकरण की प्रक्रिया तब शुरू होती है जब जादूगर खुद को ट्रान्स की स्थिति में डालता है, मुख्य रूप से ड्रम या खड़खड़ाहट द्वारा उत्पन्न नीरस और दोहरावदार संगीत ध्वनियों के साथ और इसके साथ नृत्य की गतिविधियाँ होती हैं। संगीत, गायन या नृत्य द्वारा लयबद्ध उत्तेजना लंबे समय से चेतना की परिवर्तित अवस्थाओं को प्रेरित करने के लिए जानी जाती है और इसे वर्तमान समय के हिमालयी आदिवासी शमनों (स्थानीय रूप से 'झंकरी' कहा जाता है) में देखा जा सकता है। थीसिस के अनुष्ठान अनुभाग में कुछ नृत्य दृश्यों पर चर्चा की गई है जो शैमनिस्टिक विशेषताओं को दर्शाते हैं। हालाँकि, यह संभव है कि इस खंड के तहत चर्चा किए गए दृश्य शैमनिक तत्वों के साथ नृत्य के चित्रण भी हो सकते हैं। मध्य भारत की जनजातियों के नृवंशविज्ञान संबंधी अध्ययनों ने सामाजिक बंधन और एकजुटता के रूप में सामुदायिक नृत्य के महत्व को रेखांकित किया है और यह कैसे उनके सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग है।

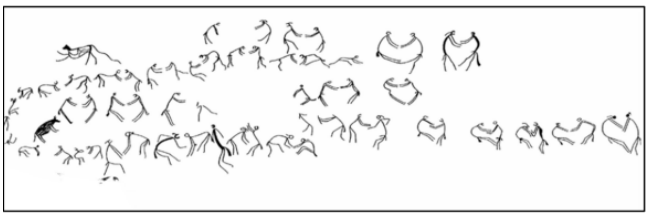

चित्र 3: फिरंगी पहाड़ियाँ, भोपाल जिला

फिरंगी में मध्यपाषाण काल का नृत्य दृश्य है। इसमें कई जोड़े जोड़े में हैं, जिनके हाथ एक-दूसरे की ओर बढ़े हुए हैं, लेकिन वे कभी एक-दूसरे को छूते नहीं हैं। सभी जोड़े एक जैसी मुद्रा में हैं। मानव आकृतियाँ विशिष्ट मध्यपाषाण काल की चित्रकला शैली में बनाई गई हैं, क्योंकि उन्हें छड़ी के आकार में बनाया गया है और उन्हें लंगोटी पहने हुए दिखाया गया है।

चित्र 4: लाखाजुआर, रायसेन जिला

लाखाजुआर में एक मध्यपाषाण काल की पेंटिंग है जिसमें हरे रंग से रंगे नर्तकों के एक समूह को दिखाया गया है। एक नर्तक के नेतृत्व में, जिसके सिर पर एक चौकोर हेडड्रेस है जिसे चमकते हुए पंखों या आभूषणों से सजाया गया है, सत्रह नर्तकियों की एक पंक्ति है जो सामने वाले व्यक्ति को दोनों हाथों से पकड़कर एक चेन बना रही है। पंक्ति का आखिरी नर्तक अपना संतुलन खो चुका है। उनके सामने कई और नर्तक हैं जो कलाबाजियाँ करते हुए नृत्य कर रहे हैं। नर्तकियों के मुंह के सामने एक छोटा सा घेरा दर्शाया गया है जिसे न्यूमायर ने 'भाषण बुलबुले' के रूप में व्याख्यायित किया है जो यह संकेत देते हैं कि व्यक्ति गा रहा है या मंत्रोच्चार कर रहा है।

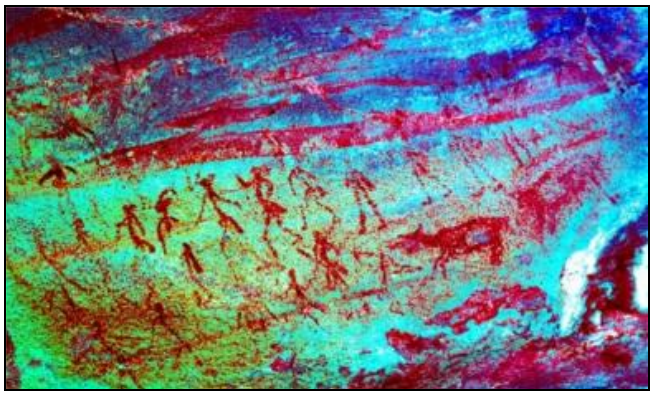

चित्र 5: भीमबेटका, रायसेन जिला

भीमबेटका में मध्यपाषाण काल का नृत्य दृश्य है जिसमें नर्तकियों की एक पंक्ति दिखाई गई है। नर्तकियों ने लंगोटी और सिर पर एक पंख या आभूषण पहना हुआ है। नीचे कुछ और नर्तकियों को चित्रित किया गया है। नर्तकियों को छड़ी के आकार की आकृतियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो मध्यपाषाण काल के चित्रों की खासियत है। दाईं ओर और भी नर्तकियों को चित्रित किया गया है, लेकिन उनके शरीर के केवल पैर वाले हिस्से ही दिखाई दे रहे हैं।

चित्र 6: लाखाजुआर, रायसेन जिला

लाखाजुआर में मध्यपाषाण काल का एक नृत्य दृश्य है जिसमें हरे रंग से रंगे पांच नर्तकों के समूह को दिखाया गया है। नर्तकियों को एस-आकार के होने के बावजूद पूरी गति में दिखाया गया है। वे लंगोटी पहने हुए हैं और उनकी कोहनी और घुटनों के आसपास सजावट है। दो नर्तकियों के मुंह के सामने 'भाषण बुलबुले' हैं, जो गायन का संकेत देते हैं।

संरक्षण

मध्य प्रदेश और इसके आस-पास के इलाके में बड़े पैमाने पर जंगल हैं और आदिवासी आबादी रहती है, जो लंबे समय से रॉक आर्ट के लिए एक सुरक्षित गढ़ रहा है। हालांकि, इस क्षेत्र में जंगलों के लगातार विनाश के कारण, नरम बलुआ पत्थर की गैर-समरूप और शहद के छत्ते जैसी संरचना ने नमक के फूलने और क्रिप्टोग्रामिक विकास को अनुमति दी है, जो अंतरालीय छिद्रों के माध्यम से पानी के केशिका प्रवाह द्वारा तेज हो गया है। लौहयुक्त

बलुआ पत्थर की सतह भी मानव यातायात में वृद्धि के कारण बायोडिग्रेडेबल मलबे से खराब हो गई है, जो सूक्ष्म जीवों को खिलाती है। समय के साथ बलुआ पत्थर पर बनी एक क्रिप्टो क्रिस्टलीय सिलिका त्वचा ने प्रकाश को रोककर चित्रों को फीका करने में योगदान दिया है। वनस्पति अवरोध, पानी के मोड़ के लिए ड्रिप चैनल, पारिस्थितिक संरक्षण के हिस्से के रूप में पहुंच का विनियमन मध्य प्रदेश में रासायनिक या संरचनात्मक संरक्षण की तुलना में अधिक प्रभावी होगा।

मध्य प्रदेश में जंगल के अंदर मौजूद ज़्यादातर रॉक आर्ट साइट्स संरक्षित हैं, क्योंकि प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल और नियम 1958-59 के अलावा, भारतीय वन अधिनियम, 1927, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1980 अग्नि रेखाएँ बनाए रखकर आग के खिलाफ़ सावधानियाँ प्रदान करते हैं, उत्खनन पर रोक लगाकर खनन को नियंत्रित करते हैं और मानव और मवेशियों की आवाजाही को प्रतिबंधित करके जैविक दबाव को रोकते हैं। इन क़ानूनों में दिए गए प्रावधानों को हवा से प्रेरित कटाव और शैवाल निर्माण, सौर विकिरण के कारण अलग-अलग फीकेपन, तापमान के कारण दरार और नमी, सतह के बहाव और दरारों के कारण अलगाव के खिलाफ़ रॉक शेल्टर और पेंटिंग्स की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सख्त प्रवर्तन की आवश्यकता है।

मौसम और निक्षालन के कारण रंगद्रव्य और रंग का लगातार नुकसान, विभाजन, परतदारपन और टूटना, धूल, मिट्टी, कोबवेब, कालिख, काई, लाइकेन, कीड़े, पीड़क, मिट्टी के घोंसले, छत्ते और चल रहे खनन, सड़क निर्माण और बांध निर्माण गतिविधियों से रेत के विस्फोटों के संचय के खिलाफ प्राकृतिक वनस्पति अवरोधों की देखभाल करके रोका जा सकता है। आस-पास के परिदृश्य को स्थिर संतुलन में संरक्षित करके दैनिक और मौसमी तापमान में उतार-चढ़ाव के कारण होने वाले खनिज और ब्लॉक विघटन से आश्रयों की रक्षा की जानी चाहिए। पहाड़ियों और मैदानों में वनस्पति और वन्यजीवों के प्रबंधन को एकीकृत करने और रॉक शेल्टरों के सूक्ष्म जलवायु को बनाए रखने के लिए जंगल के अंदर बड़े किलों, सीढ़ीदार कुओं, पवित्र उपवनों और प्राकृतिक जल कुंडों को संरक्षित करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों में विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए चुने गए छह जिले रायसेन, भोपाल, बैतूल, होशंगाबाद, मंदसौर और रायगढ़ थे। अध्ययन क्षेत्र से संबंधित सभी प्रकाशित स्रोतों से एकत्रित व्यापक डेटा का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मध्य भारतीय शैल कला समरूप नहीं है। इस स्थानिक सेटिंग के भीतर क्षेत्रीय विविधताएँ हैं और इसलिए, इस क्षेत्र की शैल कला परंपरा को परिभाषित करने के लिए एक छत्र शब्द का उपयोग करना गलत होगा। चूंकि ज्ञान शोधकर्ता शैल कला कलाकार के अनुभव के परिदृश्य पर बहुत देर से पहुंचता है, इसलिए यह आवश्यक है कि मध्य प्रदेश के शैल कला परिदृश्यों में रहने वाले समुदायों को इसकी शैल कला के आकार और अर्थ को समझने में उचित स्थान और श्रेय दिया जाए।

संदर्भ

1. वाल्या एम. भारत में जनजातीय विकास नीतियाँ-इसकी समस्याएँ और संभावनाएँ। 2022।
2. रस्तोगी, ट्विंकल. मध्य प्रदेश की कलात्मक विरासत। 2024।
3. चिकित्सा समूह, सर सीताराम और लेडी शांताबा. स्वदेशी जनजातियों की संस्कृति और जीवन पर एक अध्ययन और उनकी कमाई के स्रोतों में वृद्धि। 2023।
4. चक्रवर्ती, कल्याण. मध्य प्रदेश में रॉक आर्ट। 2019।
5. चक्रवर्ती, कल्याण. शिव के साथ चलना: भारतीय कला, पुरातत्व और धर्म की संज्ञानात्मक जड़ें। 2018।
6. अरुर एस. वायल्ड टी. गोंड लोगों की मध्य भारत कला की खोज: समकालीन सामग्री और सांस्कृतिक महत्व. 20वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सूचना विज़ुअलाइज़ेशन (IV), लिस्बन, पुर्तगाल, 2016. पृष्ठ 380-383. doi:10.1109/IV.2016.80.
7. कुमार, एस. गोंड कला और पेंटिंग: अतीत, वर्तमान और भविष्य। 2014।
8. बेनेट, जे. बैरी और जूडिथ हेवन के संग्रह से गोंड पेंटिंग। 2015।
9. गोस्वामी, डॉ. मानस प्रतिम. गोंड चित्रकला: समकालीन परिदृश्य का एक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन रिव्यू. 2018;6(1).
10. गोस्वामी, मानस प्रतिम., यादव, प्रिया. डॉट्स एंड लाइन्स: गोंड चित्रकला में रूपांकनों की संकेतविज्ञान. जर्नल ऑफ मीडिया एंड कम्युनिकेशन. 2020;3(2):35-50.
11. कोरेटी, शैमरॉक. मध्य भारत की गोंड जनजातियों का सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटी. 2016;6(4).
12. राव, टी.ए.जी. हिंदू आइकनोग्राफी के तत्व, खंड 01. मद्रास: लॉ प्रिंटिंग हाउस; 1968.
13. शर्मा, आर. मध्य प्रदेश के पुरातत्व की संदर्भ पुस्तक। भोपाल: मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी; 1974.
14. सिंह, आर. भारत के प्राचीन स्मारक। नई दिल्ली: हेरिटेज पब्लिशर्स; 1991.
15. श्रीवास्तव, बी. प्राचीन भारतीय आइकनोग्राफी और मूर्तिकला। बनारस: बनारस हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन; 1996.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.